بسم الله الرحمن الرحيم

सातवाँ वाअज़

८ मोहर्रमुल हराम १४४० हि

दारुस सकीना मुंबई

सैयदना ताहेर फखरुद्दीन त.उ.श.

वाअज़ सारांश

आका मौला सैयदना ताहेर फखरुद्दीन त.उ.श. ने खिताब फरमाया कि मुमिनीन, अपने मौला अली इब्ने अबी तालिब स.अ. के शिया खोलोसा, जैसे मौला मोहम्मद वैसे मौला अली है, यह अकीदा मुमिनीन का है।

मौलाना त.उ.श. ने नखील (खजूरी) सैहानी की ज़िक्र फरमाई। रसूलुल्लाह स.अ. और अमीरुल मुमिनीन स.अ. तमाम साबिक दौर के मजमा है (जमे करनेवाले) अनवार के मजमा है।

रसूलुल्लाह स.अ. फरमाते है "शीअतो अलीयुन हुमुल फ़ाएज़ून", अली की शिया जीत पानेवाले है । आप के इस कलाम में तमाम माअना समायी हुइ है, आप ने हक का रास्ता एक जुमले से दिखा दिया।

रसूलुल्लाह स.अ. फरमाते है कि अगर तमाम अंबिया की फ़ज़ीलत देखनी हो तो अली की तरफ देखे। यह रिवायत सैयदना ने बयान फरमाई।

आका मौला ने अमीरुल मुमिनीन की शानात बयान फरमाई कि फलक उल मुहीत की शान है। इमाम बाकिर स.अ. ने फरमाया कि अर्श के चारो ऑर हर पाये के पास ७०,००० फ़रिश्ता है जिन की इबादत नहीं मगर अली का इकरार करना है।

अमीरुल मुमिनीन फरमाते है कि आप की वलायत अंबिया अवसिया पर फ़र्ज़ की गयी, और आप का मकाम इतना बलंद है कि बशर के दिल पर उसका खतरा (ख्याल) भी नहीं गुज़र सकता।

रसूलुल्लाह स.अ. ने फरमाया कि खुदा ने जिसे अली की वलायत (मोहब्बत) की रोज़ी दी हो, खुदा ने उसे दुनिया और आखेरत का खैर अता कर दिया है।

सैयदना ने फरमाया मोहम्मद और अली दोनों ही मौला है। इसी तरह नबी मोहम्मद की शेहज़ादी मौलातुना फ़ातेमा मौलातुल अबरार है, हसन हुसैन दोनों मौला, इमाम बाद इमाम, मौला बाद मौला।

इमाम उज़ ज़मान परदे में है, दावत काइम है, इमाम ने दाई को अपनी ही गादी पर बिठाया है, इसी लिए मुमिनीन दाई को मौला मानते है। एक के बाद एक दाई, मौला बाद मौला, हर एक मौला दुसरे मौला के हम मिस्ल है। बयान है कि काइम उन्हें किया जाता है जो आप के नास के मिस्ल हो, मौला बाद मौला, हमशान, इस सिलसिले का इकरार और मोहब्बत करनेवाले हम है।

रसूलुल्लाह स.अ. ने मौलाना अली स.अ. से फरमाया कि हमारे शिया को खुदा ने हमारी तीनत (मिटटी) के बचे हुए हिस्से से पैदा किया है, इस माद्दे की बरकत के सबब मुमिन मौला की मोहब्बत करते है।

अली की कुनियत अबू तुराब यानि तुराब के बावा बावा है। तुराब से मुराद मुमिन है। मुमिन अमीरुल मुमिनीन के कदम की ख़ाक हो जाए तो उसके नसीब की बलंदी है। सैयदना कुत्बुद्दीन फरमाते है कि जिस वक्त सैयदना मोहम्मद बुरहानुद्दीन मनसूस के मरतबे

में थे, दाई के रुतबे में आने से पहले, उस वक्त ग़दीरे खुम के मौज़े में सैयदना बुरहानुद्दीन के साथ सैयदना कुत्बुद्दीन पधारे थे, वहाँ सैयदना कुत्बुद्दीन ने सैयदना बुरहानुद्दीन के कदमों के नीचे जो ख़ाक (मिटटी) थी उसे बरकत के खातिर ले ली। सैयदना बुरहानुद्दीन के असरे मैमून में सैयदना कुत्बुद्दीन हज के लिए पधारे थे और गदीर के मौज़े में ईदे गदीर के दिन वहाँ वाअज़ फरमाई और मुमिनीन का मिसाक भी लिया।

मौलाना त.उ.श. ने फ़रमाया कि इमाम हुसैन को क़त्ल करने में दुश्मन की गर्ज़ यह थी कि नुबुव्वत के घर पर ताला लग जाए, कोई मौला बाकी न रहे, पर हुसैन जैसे हुसैन, इमाम हर ज़मान में मौजूद है। हुसैन इमाम के रास मुबारक से निकलते हुए नूर को आस्मान की तरफ चढ़ते देखने वाले मसीही मज़हब के राहिब ईमान लाए यह रिवायत मौलाना ने फरमाइ।

सैयदना ने इस आयत की तिलावत कर माअना बयान की

ذلك بان الله مولى الذين آمنوا وان الكافرين لا مولى لهم

अल्लाह ईमान लानेवालों के मौला है, काफेरीन का कोई मौला नहीं। मौला के ४ हर्फ है इस मुनासबत से सैयदना ने ४ फ़सल बयान फरमाई

पहली फसल : मोहम्मद रसूलुल्लाह स.अ. मौला है। वलायत के सबब मुमिन के शरीअत के आमाल कबूल होते है। मौला है तो सब कुछ है, “मन लहुल मौला फ़लहुल कुल”।

अमीरुल मुमिनीन मलाएकत के दरमियाँ फैसला फरमाते है। जिबरईल मलाएकत में नेक्तर है क्यों कि हाशेमी उल मलाएकत है।

दूसरी फसल: मौला कौन कि अली इब्ने अबी तालिब। अमीरुल मुमिनीन ने जब रुकू की हालत में साइल को अंगूठी दी तो उस वक्त आप की शान में कुरआन की आयत उतरी, सैयदना ने फरमाया कि इस से वाज़ेह होता है कि मौला अली है।

अब्दुल्लाह बिन अब्बास से अली के इल्म की शान के बारे में ज़िक्र आई है वह ज़िक्र मौलाना ने फरमाई, अब्दुल्लाह बिन अब्बास फरमाते है कि मौलाना अली के इल्म के साथ मेरे इल्म की कोई तुलना ही नहीं है।
सैयदना कुत्बुद्दीन महू तशरीफ़ ले गये थे, वहाँ आपने एक शख्स को फरमाया कि दाई के साथ किसी अन्य दुन्यवी व्यक्ती की तुलना नहीं हो सकती - No comparison.

सैयदना ने यह आयत पढ़ी:

ربنا آتنا في الدنيا حسنة وفي الآخرة حسنة

दुनिया में हसनत मिलने की माअना अली की वलायत है, आखेरत में हसनत जन्नत। अली की वलायत के सबब जन्नत मिलती है।

रसूलुल्लाह स.अ. ने अमीरुल मुमिनीन पर ग़दीरे ख़ुम में नस्स फरमाई यह ज़िक्र सैयदना ने फरमाई, यह नस्स दिन के मिसल रौशन है, वाज़ेह है पर एक इशारे के मिसल है। रसूलुल्लाह स.अ. ने यह जुमले नहीं फरमाएँ कि आप के बाद खलीफा अली है। यह ज़िक्र सैयदना फखरुद्दीन ने कोर्ट में भी फरमाई थी।

मुखालेफीन बातिल की बातें करते है जिस से वाज़ेह होता है कि वे बातिल पर है। वे कहते है की इशारे से नस्स नहीं की जा सकती, जब कि मिसाक में भी इशारे से नस्स फरमाने के बारे में साफ़ ज़िक्र है।

गदीर में कई ने अमीरुल मुमिनीन के मरतबे का इकरार किया आप को मुबारकबाद दी, लेकिन बाद में

आप की दुशमनी की, इस की ज़िक्र सैयदना ने फरमाई।

सुलेमान ने सैयदना दाउद बिन कुतुबशाह रि.अ. का तीन साल तक इकरार किया और आप को दाई मान कर सजदा बजाया, यह ज़िक्र सैयदना ताहेर सैफुद्दीन रि.अ. ने फरमाई है। फिर हाल के ज़मान की ज़िक्र सैयदना फखरुद्दीन ने फरमाइ जिस से अकीदा मज़बूत हो, शक शोबोहात दूर हो। सैयदना मोहम्मद बुरहानुद्दीन ने बावाजी साहब पर नस्स की, सैयदना ताहेर सैफुद्दीन ने भी सैयदना कुत्बुद्दीन के मकाम के बारे में कई इशारे फरमाएँ, जानकार आलिम इन इशारों को बराबर से समझते रहे, और ताअत से अमल करते रहे।

आज जो मुखालेफीन दावा कर रहे है। इन सब के हाथ के लिखे हुए ख़त हमारे पास है। जब वे़ खुद पहले ही इकरार कर ही चुके है तो फिर शाहिद की ज़रूरत ही उन्हें क्यों है? इन खतो में दावा करने

वाले बार बार सैयदना कुत्बुद्दीन को मौला कह कर ख़िताब करते है। आप की कई सिफत लिख कर अर्ज़ करते है, लिखते है कि सैयदना ताहेर सैफुद्दीन और सैयदना मोहम्मद बुरहानुद्दीन के inspiration (रूहानी कुव्वत) से सैयदना कुत्बुद्दीन वाअज़ फरमाते है। वे ख़तों में खुद को सैयदना कुत्बुद्दीन के गुलाम कहते है, यह लिख कर अर्ज़ करते है कि आप का गुलाम मुफद्दल सैफुद्दीन, और लिखते है कि आप "बेवे मौला (दोनों मौला) - सैयदना बुरहानुद्दीन और सैयदना कुत्बुद्दीन - को खुदा क़यामत के रोज़ तक बाकी रखे, इन शब्दों में अदा करते है। जैसे सैयदना बुरहानुद्दीन को वैसे सैयदना कुत्बुद्दीन को आप का मनसूस मान कर ख़त में लिखते है।

सैयदना त.उ.श. ने फरमाया कि आप ने भी देखा है कि बरसों तक वे बावाजी साहेब को सजदा बजाते थे। सैयदना मोहम्मद बुरहानुद्दीन ने फरमाया है कि सजदा सिर्फ दाई को किया जाता है या कि उनके

सामने जो दाई के मनसूस हो। सैयदना बुरहानुद्दीन के सामने सैयदना कुत्बुद्दीन को सजदा करते थे।

इन लोगों ने पहले इकरार किया लेकिन फिर तकब्बुर आ गया। सभी सजदा बजा कर सैयदना कुत्बुद्दीन को कदमबोस होते थे। सैयदना मोहम्मद बुरहानुद्दीन के देखते हुए भी सैयदना कुत्बुद्दीन को सजदा करते थे। मियासाहेब इब्राहीम यमानी (जिन्होंने सैयदना ताहेर सैफुद्दीन और सैयदना मोहम्मद बुरहानुद्दीन की बरसों तक खिदमत बजाई, व़े भी सैयदना कुत्बुद्दीन को सजदा करते थे। यह सब कुत्बुद्दीन मौला का इकरार करने के बाद आज शहादत मांग रहे है।

तीसरी फसल: मौला हर ज़मान में इमाम। मौला आप के वारिस मौला को काइम करते है, नस्स फरमाते है, बताते है कि यह मेरे वारिस है। कभी जाहरन (लोगो के बीच) नस्स फरमाते है, जैसे रसूलुल्लाह स.अ. ने ७०,०००० के दरमियाँ नस्स फरमाई, कभी गिनती के

लोगो के बताते है, तो कभी इतनी मख़्फ़ी में नस्स फरमाते है के सिर्फ मनसूस ही शाहिद हो।

सैयदना मोहम्मद बुरहानुद्दीन के मिज़ाज पर गिरानी हुइ। उन लोगो ने आप को ऐसे हाल में ४८ घंटो तक घर में रखा, खुराक या पानी बगैर। हमें इन अंदरूनी बातों की खबर मिली है, व़े लोग दुश्मनी में क्या नहीं करते है।

नास और मनसूस अकेले ही हो तब भी नस्स वैध है, और इस तरह से नस्स के कई वाक़िये दावत की तारीख में हुए है, सैयदना ने इन की कई मिसाले भी दी - अंबिया, अइम्मत और दोआत के ज़मान की मख़्फ़ी नस्स की तारीख बयान फरमाई।

नस्स के बारे में हिदायत देने का किसी का हज़ नहीं। इमाम और दाई जानते है नस्स कैसे करना, ज़मान और हिकमत का मुकतदा क्या है यह नस्स करने वाले साहेब ही जानते है।

इमाम मनसूर फरमाते है कि काइम इमाम ने आप पर मख़्फ़ी में नस्स फरमाई । आप के और काइम इमाम के अलावा किसी को भी इस की खबर नहीं थी। दुसरे भाई दावत में नुक्सान फसाद करे मगर यह दावत यह दौलत काइम इमाम के बाद आप ही के लिए है।

सैयदना ने फरमाया कि मुखालेफीन ने जब कोर्ट में पेश किया कि जमाअत के दरमियाँ नस्स होनी चाहिए, तब आप ने दलील की कि रसूलुल्लाह स.अ. ने तो फरमाया है कि एक वाहेद मुमिन भी जमाअत है, तो उन लोगों के पास कोई जवाब नहीं था।

इमाम मनसूर के वफात के बाद इमाम मोइज़ ने सैयदना क़ाज़ी अल नौमान को फरमाया कि “मौलाका मदा, मौलाका बकेया”, एक मौला वफ़ात हो चुके पर एक मौला बाकी है।

इमाम आमिर की रज़ा से किताब 'हिदायत आमेरिया' लिखा गया जिसमें हुज्जत कर के साबित किया गया कि नस्स कभी भी बदली नहीं जाती, और साबित किया गया कि मुस्ताअली इमाम हक के इमाम है।

चौथी फसल: इमाम ने दाई अल मुतलक को इमाम की ही गादी पर बिठाया है। दाई इमाम के ममलूक है, इमाम की गादी पर है तो मुमिनीन उन्हें मौला कहते है और मानते है।

दाई के बाद दाई, आका के बाद आका, आयत के बाद आयत, नूर के बाद नूर, मौला के बाद मौला, यह सिलसिला काइम है।

आका मौला त.उ.श. ने सैयदना जलाल रि.अ. के सपने की ज़िक्र फरमाई, कि इमाम उज़ ज़मान आप के ख्वाब में तशरीफ़ लाए और दोनों दाउदैन - सैयदना दाउद बिन अजबशाह और सैयदना दाउद बिन कुतुबशाह पर नस्स करने फरमाया। कई मिसाल

है कि जब नास ने अपने मनसूस को वसीयत फरमाई कि आप इस साहेब पर नस्स करना। तुम्हारी गरदन में यह बात अमानत है। मनसूस भी इस वसीयत पर अमल करते ही है - और क्यों नहीं, फैज़ और ताईद से नास ने यह वसियत फरमायी हुइ है। सैयदना फखरुद्दीन ने आप पर कुत्बुद्दीन मौला ने नस्स फरमाई इसकी ज़िक्र भी की।

सैयदना कुत्बुद्दीन अमेरिका में तशरीफ़ रखते थे तब मिज़ाज पर गिरानी हुइ। सैयेदी फखरुद्दीन शहीद के उर्स के मुबारक दिन में ममलूको आले मोहम्मद को इमाम उज़ ज़मान की नियाबत के शरफ से आप ने ख़ास किया। आप का जितना शुकुर करूँ कम है।

आका मौला त.उ.श. ने फरमाया कि मैं मेरे मौला इमाम उज़ ज़मान पर कुरबान हो जाऊं। मुमिनीन मुमेनात सभी मेरे साथ यहाँ और तमाम बिलाद इमाम्मियाह में मौजूद है, मैं दावत करता हूँ, “मन शाआ फलयुमिन, वमन शाआ फल यकफुर”, चाहो तो

इमान लाओ या चाहो तो कुफुर करो। जो माने उनके लिए जन्नत है, लब्बैक या दाईअल्लाह कहे उनके लिए जन्नत है।

शैतान के खोराफात किसम किसम के होते है। एक आबिद जो सालों से बंदगी करते आए थे, उन्हें इब्लीस ने एक तपिये की सूरत में आ कर बेहका दिया यह ज़िक्र सैयदना ने फरमाई। हमेंशा - अउज़ोबिल्लाहे मिन अश शैतान निर रजीम, बिस्मिल्लाह अर रहमान अर रहीम पढ़ते रहे, शैतान से पनाह मांगते रहे।

जो मौला को मानते है, ताअत करते है, मोहब्बत करते है उन्हें क्या अजर मिलता है, यहाँ हदीसे कुदसी ज़िक्र फरमाई कि बनी आदम ताअत करें तो खुदा उसे हमेंशा के लिए जिंदा कर देता है।

हम्द, सलवात और दोआइया कलेमात के बाद मौलाना ने इमाम हुसैन स.अ. की शहादत पढ़ी और

अमीरुल मुमिनीन मौलाना अली स.अ. की पुरदर्द शहादत पर वाअज़ तमाम हुइ। मुमिनीन ने आहोज़ारी के साथ खूब मातम किया।